!! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !!


प्रकाशन वर्ष 2018

भाषा : हिन्दी

माह : अगस्त

नवां अंक


भक्ति दर्शन

भक्ति का महासंगम

# ॥ भक्ति दर्शन ॥

## भक्ति का महासंगम

सावन शिवरात्रि - हरियाली तीज - नाग पंचमी

गुरु पूर्णिमा महोत्सव - तुलसीदास जयंती - पुत्रदा एकादशी

रक्षा बंधन - अगस्त माह राशिफल

!! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !! भक्ति दर्शन !!

# सावन शिवरात्रि

## 9 अगस्त 2018 (गुरुवार)

### सावन शिवरात्रि पूजा मुहूर्त :–

निशिता काल पूजा समय : 00:05 से 00:48 (43 मिनट) (10 अगस्त 2018)

रात्रि प्रथम प्रहर पूजा समय : 19:02 से 21:44

रात्रि द्वितीय प्रहर पूजा समय : 21:44 (09 अगस्त 2018) से 00:26 (10 अगस्त 2018)

रात्रि तृतीय प्रहर पूजा समय : 00:26 से 03:08(10 अगस्त 2018)

रात्रि चतुर्थ प्रहर पूजा समय : 03:08 से 05:51(10 अगस्त 2018)

सावन शिवरात्रि पारण समय : 05:51 से 15:43 (10 अगस्त 2018)

एक तो सावन का सुहावना माह, रिमझिम बरसते बादल और उस पर शिव का जयकारा, यही सब खूबियां बनाती हैं इस माह को और भी पवित्र और लुभावना। सावन का माह शिवजी का प्रिय माह है, कोई भी भक्त इस माह में शिव जी को प्रसन्न करने के लिए जो कुछ भी करता है, शिव सब स्वीकार कर लेते हैं।

### सावन शिवरात्रि का महत्व :–

वैसे तो पूर्ण वर्ष में 12 से 13 शिवरात्रि आती हैं, किन्तु इन सभी में दो शिवरात्रियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं– फाल्गुन मास की शिवरात्रि और सावन शिवरात्रि। फाल्गुन मास में आने वाली शिवरात्रि महाशिवरात्रि कहलाती है और यह सबसे बड़ी शिवरात्रि है। इसके बाद सावन शिवरात्रि महत्वपूर्ण है, क्योकि सावन मास में आने के कारण यह शिव के निकट है। इस दिन भी लोग व्रत रख कर शिवलिंग की बेलपत्र आदि से उपासना करते हैं। इस माह में कांवरिये हरिद्वार, गंगोत्री आदि पवित्र स्थानों से गंगाजल लेकर आते हैं और शिवजी का अभिषेक करते हैं।

### सावन शिवरात्रि की व्रत विधि :–

सावन शिवरात्रि का व्रत भी महाशिवरात्रि की ही भांति किया जाता है। यह व्रत शिवरात्रि के एक दिन पहले अर्थात त्रयोदशी के दिन एक समय भोजन करके आरम्भ किया जाता है। शिवरात्रि के दिन प्रातःकाल जल्दी उठकर स्नान आदि करने के बाद शिवजी के मंदिर जाकर अथवा घर पर शिवलिंग की पूजा करके उनका अभिषेक किया जाता है। अभिषेक के लिए पंच द्रव्य अर्थात दूध, दही, शहद, हल्दी तथा जल आदि का उपयोग किया जाता है। पुरे दिन व्रत रख कर अगले दिन इसका पारण किया जाता है, कुछ लोग उसी दिन रात्रि में भी भोजन कर लेते हैं किन्तु यदि संभव हो तो अगले दिन ही भोजन करें। शिवरात्रि के दिन रात भर जाग कर कमर सीधी रखकर ध्यान मुद्रा में बैठना तथा ॐ मन्त्र का जाप करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस दिन शिवजी पर भांग, धतूरा और बेलपत्र चढ़ाना भी शुभ होता है। सावन के महीने में उत्तर भारत में पार्थिव पूजा का भी आयोजन घर घर में किया जाता है। पार्थिव पूजा में शुद्ध मिट्टी के 108 अथवा 1008 अथवा 1100 शिवलिंग बनाये जाते हैं जिनका विधि विधान से पूजन किया जाता है और अंत में इन शिवलिंगों को पवित्र नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है।

### सावन शिवरात्रि व्रत के लाभ :–

1. विद्यार्थियों को शिक्षा सम्बन्धी परेशानियों सेछुटकारा मिलता है। उनकी बुद्धि विद्या में दृढ होती है।
2. शत्रुओं का नाश होता है, घर परिवार से कलेश का नाश होता है।
3. शुभ कार्य बिना विघ्न के पूर्ण होते हैं।
4. कुवारी कन्याओं को अच्छा वर प्राप्त होता है।
5. विवाहित स्त्रियों के सुहाग की रक्षा होती है, पति की आयु बढ़ती है और संतानों की उन्नति होती है।
6. कालसर्प योग का निवारण भी इसी माह में किया जाता है।

# हरियाली तीज

हरियाली तीज : 13 अगस्त 2018 (सोमवार)
हरियाली तीज पूजा मुहूर्त :–
तृतीया तिथि आरम्भ : 08:36 बजे (13 अगस्त 2018)
तृतीया तिथि समाप्त : 05:45 बजे (14 अगस्त 2018)

## हरियाली तीज का महत्व :–

हरियाली तीज महिलाओं के लिए सजने सँवरने का और पति के लिए मंगल कामना करने का दिन है। श्रावण मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया को हरियाली तीज मनाई जाती है, इसे छोटी तीज भी कहा जाता है क्योक इसके 15 दिनों बाद भी एक तीज होती है और इस तीज को कजरी तीज कहा जाता है। यह ऐसे समय में मनाई जाती है जब मौसम बहुत सुहावन होता है, और सारा वातावरण हरा भरा होता है। ऐसे समय में मन भी मयूर की तरह नाचने लगता है। इस त्यौहार में महिलाएं दिन भर व्रत रख कर नाचती गाती हैं तथा झूला झूलती हैं।

## हरियाली तीज की पौराणिक कथा :–

माता सती के अपने पिता के घर आत्मदाह करने के बाद शिवजी घोर ध्यान में चले गए थे। कई हजार वर्षों तक उन्होंने अपनी आँखें नहीं खोली थी। इसी बीच माता सती हिमालय राज के घर पर कन्या रूप में जन्मी, वह बालपन से ही शिव जी की भक्ति में लीन रहती थीं। तब एक दिन नारद जी की प्रेरणा से शिवजी को पति रूप में पाने के लिए वे हिमालय की कंदराओं में तपस्या करने चलीं गयीं। उन्होंने सैकड़ों वर्षों तक शिवजी की कठोर तपस्या की थी तथा कभी केवल पत्ते खा कर तो कभी निर्जला रहकर उन्होंने तपस्या की थी। कहा जाता है, श्रवण मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया के दिन ही शिवजी ने पार्वती जी को दर्शन दे कर उन्हें अपनी पत्नी रूप में स्वीकार किया था। और साथ ही ये आशीर्वाद भी दिया कि जो भी कन्या इस दिन कठोर व्रत का पालन करेगी तथा माँ गौरी की पूजा करेंगी उन्हें मनोवांछित सुहाग की प्राप्ति होगी।

## कैसे मनाएं हरियाली तीज :–

इस दिन कुँवारी कन्याएँ तथा सुहागिन स्त्रियां व्रत रखतीं हैं। यह व्रत निर्जला रहकर किया जाता है, तथा इसका पारण अगले दिन सुबह किया जाता है इसलिए इसे करवा चौथ से भी अधिक कठिन माना जाता है। इस दिन महिलाएं हाथों में मेहँदी लगातीं हैं, तथा सोलह श्रृंगार करतीं हैं। सामान्यत: यह त्यौहार मायके में मनाया जाता है और ब्याहता कन्या के लिए उसके ससुराल से श्रृंगार का सामान, मिठाइयां, चूड़ियां तथा कपडे आदि भेजे जाते है, इसे सिंधारा कहते हैं। स्त्री इन्ही से अपना श्रृंगार करतीं हैं तथा भगवान शिव और देवी पार्वती की पूजा करती हैं। वट के वृक्ष में या किसी भी अन्य वृक्ष में झूला डाला जाता है तथा महिलाएं लोक गीत गाकर झूला झूलती हैं। इस त्यौहार में लाल, हरा तथा गुलाबी रंग का ही विशेष श्रृंगार किया जाता है।
इस दिन देवी पार्वती की पूजा से कुंवारी कन्याओं को मनचाहा सुयोग्य वर प्राप्त होता है, तथा विवाहित महिलाओं को सुख सौभाग्य की प्राप्ति होती है तथा पति दीर्घायु होता है। कई जगह पुरुष भी इस दिन माता पार्वती का डोला उठाकर जुलुस निकालते हैं।

# नाग पंचमी

नाग पंचमी : 15 अगस्त, 2018 (बुधवार)
नाग पंचमी पूजा मुहूर्त : 05:54 से 08:30 (2 घंटा 36 मिनट)
पंचमी तिथि आरम्भ : 03:27 बजे (15 अगस्त 2018)
पंचमी तिथि समाप्त : 01:51 बजे (16 अगस्त 2018)

## कब मनाई जाती है नाग पंचमी? :—

नाग पंचमी श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि पर मनाई जाती है। कुछ स्थानों में यह एक त्यौहार की तरह मनाई जाती है। नाग पंचमी के दिन नागों की पूजा का अत्यंत महत्व है। ज़्यादातर जगह पर नाग को दूध पिलाने की प्रथा बन गयी है, जो कि उचित नहीं है क्योकि नाग पंचमी के दिन नागों को दूध से स्नान कराने का नियम है। दूध पिलाना नागों के लिए हानिकारक है, क्योंकि वह उनका आहार नहीं है और उन्हें पचता नहीं जिससे की उनकी मृत्यु भी हो सकती है।

## नाग पंचमी का महत्व :—

पौराणिक काल से ही नागों को देवता का स्थान प्राप्त है, और नाग पूजा से शक्ति प्राप्त करने के कथाएं भी रामायण तथा महाभारत में वर्णित हैं। नाग पंचमी के दिन व्रत करके नाग देवता की पूजा करने वाले व्यक्ति को सर्पदंश का भय नहीं रहता। मान्यता है की नाग देवता को दूध चढाने से उनका घर तथा परिवार सर्प के कोप से बच जाता है, तथा उन पर नाग कृपा बनी रहती है। इस दिन आस्तिक मुनि की भी पूजा की जाती है, क्योकि उन्ही के कारण नाग प्रजाति का विनाश होने से बच गया था। सर्प पालने वाले सपेरों के लिए यह दिन एक त्यौहार की तरह होता है, उनके अनुसार इस दिन सर्प पूजा से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। घर के प्रवेश द्वार पर इस दिन नाग का चित्र लगाने की भी परंपरा है, मान्यता है की इससे नाग उस घर के रक्षक बन जाते हैं और घर किसी भी प्रकार के अपशगुनों से सुरक्षित हो जाता है।

## नाग पंचमी से जुडी कथाएं :—

हिन्दू पुराण के अनुसार ऋषि कश्यप की तेरह पत्नियां थीं, जिनमे से एक पत्नी कद्रू से नाग संतानों की उत्पत्ति हुई थी। उन्होंने हजार नाग पुत्रों को जन्म दिया था, जिनमे से आठ नाग अत्यंत दिव्य और महत्वपूर्ण हैं– अनंत, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंखपाल और कुलिक। ये आठ नाग सभी नागों में श्रेष्ठ हैं, जिनमे से अनंत विष्णु जी की सेवा में हैं और शेषनाग नाम से भी जाने जाते हैं। वासुकि जी शिव जी की सेवा में हैं तथा समुद्र मंथन में वासुकि जी की ही नेकी बनाई गयी थी।

एक बार परीक्षित को एक श्राप के कारण नागराज तक्षक ने डस लिया था, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। इससे उसका पुत्र जन्मेजय क्रोधित हो गया और उसने समस्त सर्प जाती के विनाश के लिए एक सर्पमेघ यज्ञ का आयोजन किया। यह इतना विशाल और प्रभावशाली यज्ञ था की इससे समस्त नाग जाती एक एक कर हवन कुंड में गिर के भस्म हो रही थी। अधिकतर सर्प जातियां नष्ट हो चुकीं थीं, की तभी वासुकि जी के परामर्श से उनकी बहिन जरत्कारु के पुत्र आस्तिक मुनि यज्ञ में पहुंचे। और जन्मेजय तथा उसके यज्ञ की नाना प्रकार से प्रशंसा करने लगे। इससे जन्मेजय प्रसन्न हो गया और उसने आस्तिक मुनि को मनचाहा वरदान मांगने को कहा। आस्तिक मुनि ने यह विनाश रोक देने का वरदान मांग लिया, और जन्मेजय को अपने वचन के अनुसार यह यज्ञ रुकवाना पड़ा। इससे प्रसन्न हो नाग देवता ने आस्तिक मुनि को वरदान दिया की जो कोई भी पंचमी के दिन आस्तिक मुनि की पूजा करेगा अथवा उनका नाम भी लेगा सर्प उसका कुछ भी अनिष्ट नहीं करेंगे और यहीं से नाग पंचमी मनाने की प्रथा आरम्भ हुई।

## केवल नागपंचमी के दिन दर्शन :—

भोलेबाबा की नगरी उज्जैन में एक मंदिर ऐसा है जिसके कपाट केवल नागपंचमी के दिन खुलते हैं। यह है नागचंद्रेश्वर मंदिर, जहाँ भोलेबाबा पार्वती सहित नाग शय्या

पर विराजमान हैं। यह अपने तरह का विश्व का एकमात्र मंदिर है, क्योकि केवल श्री हरी विष्णु को ही शेषनाग की शय्या पर दिखाया जाता है। किन्तु यहां भगवान् शिव दसमुखी सर्प की शय्या पर विराजमान हैं और उनके गले तथा भुजाओं पर भुजंग लिपटे हुए हैं। कहा जाता है इस मंदिर में स्वयं नागराज तक्षक विराजते हैं। तक्षक ने भगवान शिव की कृपा के लिए उनकी कठोर तपस्या की थी, तब शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें अमरता का वरदान दिया था और उन्हें अपने सानिध्य में रखा था। तभी से वे यहां विराजमान हैं, वे चाहते थे की उनके एकांत में विघ्न न हो इसलिए यह मंदिर वर्षभर बंद रहता है और केवल नागपंचमी के दिन खुलता है।

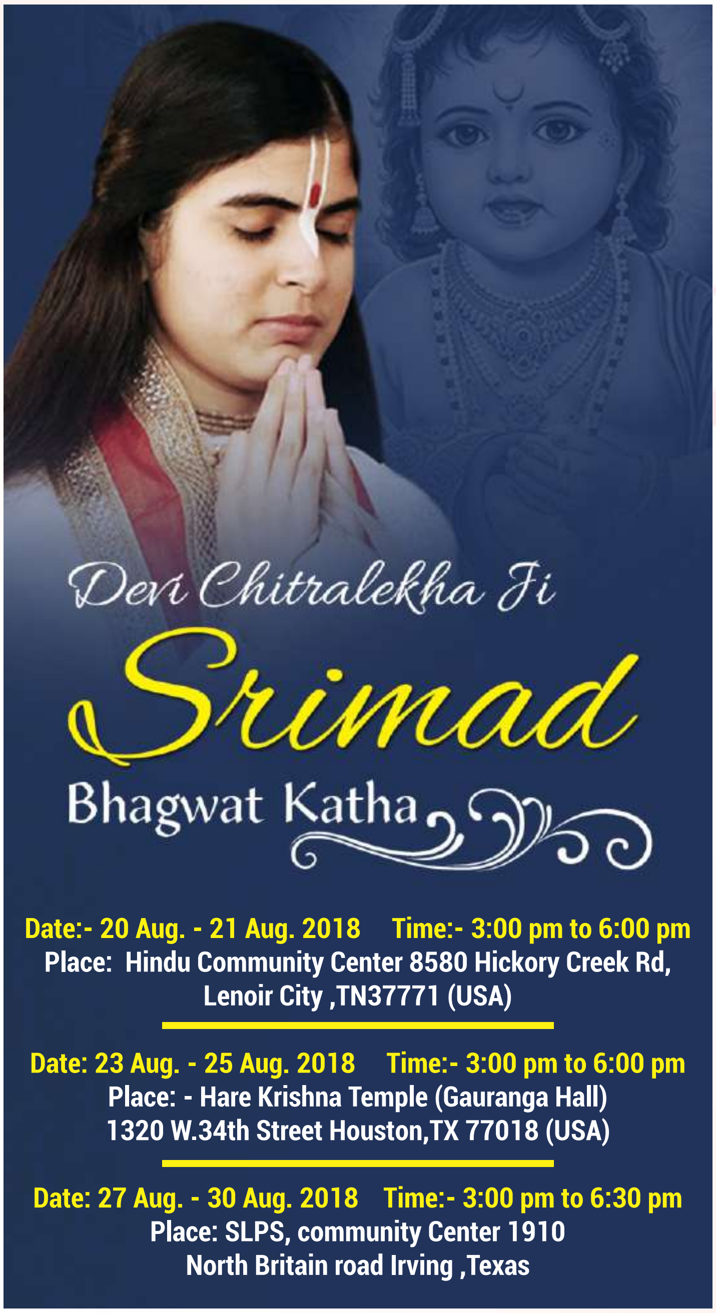


## गुरु पूर्णिमा महोत्सव

भगवान श्री कृष्ण की बाल लीलाओं की भूमि वृन्दावन में गुरुओं के सम्मान में गुरु पूर्णिमा महोत्सव आयोजित किया गया। गुरु पूर्णिमा महोत्सव 19 जुलाई से 26 जुलाई तक अर्थात 7 दिन भागवत कृपा निकुंज, वृन्दावन में मनाया गया, महोत्सव में भागवत कथा का आयोजन किया गया था। कथा सुनाने के लिए कथा व्यास पूज्य श्री ठाकुर जी थे, जिन्हे सुनने के लिए बड़ी दूर दूर से श्रद्धालुजन वहां उपस्थित हुए। सर्वप्रथम दिन ठाकुर जी ने गुरु महोत्सव के आयोजकों का धन्यवाद दिया, और इस शुभ अवसर पर अपने शिक्षा गुरु सद्गुरु अनंत श्री स्वामी रामानुज प्रपन्ना चार्यजी तथा दीक्षा गुरु अनंत श्री स्वामी गरूड़ोधाचार्य जी को याद किया। तत्पश्चात उन्होंने श्रोतागणों को कथा का महत्व बताया, उन्होंने कहा की कथा अमृत्व प्रदान करती है, रामकथा जीना सिखाती है किन्तु भागवत कथा मृत्यु का भय मिटाती है।

कथा के दूसरे दिन ठाकुर जी ने परीक्षित श्राप, ऋषि

श्रृंगी, ऋषि च्यवन तथा अश्विनी कुमारों का वर्णन किया। कथा के बीच उनके सुरीले भक्ति भजन सबको झूमने पर विवश कर देते थे। कथा के तीसरे दिन उन्होंने भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग, गुरु की शिष्य के जीवन में महत्ता, वैष्णव भक्ति तथा ध्रुव कथा का रसपान भक्तों को कराया। इसी क्रम को जारी रखते हुए चौथे दिन की कथा में उन्होंने राक्षसराज बलि की दानवीरता, राजा सगर की मुक्ति, गंगा अवतरण, राम

जन्म कथा तथा संक्षिप्त रामायण भक्तों को सुनाई। पांचवे दिन कृष्ण लला का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया, इस दिन कृष्ण जी को पालने में बिठाकर झूला भी झुलाया गया। कृष्ण जी की बाल लीलाओं का वर्णन भी साथ साथ किया गया। कथा के बढ़ने के साथ साथ प्रतिदिन भक्तो की भीड़ भी बढ़ती जा रही थी।

भक्त केवल वृन्दावन से ही नहीं बल्कि केरल, राजस्थान और दिल्ली आदि के क्षेत्रों से भी कथा में सम्मिलित हुए। कथा के छठे दिन कृष्ण लीलाओं का बखान जारी रहा, गुरु देव ने नारद महिमा का भी वर्णन किया और किसी भी कार्य के बाद हवन की महत्ता भक्तों को बताई, उन्होंने कहा की बिना यज्ञ कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता, अक्रूर जी और कृष्ण जी का मिलन तथा कृष्ण जी का वृन्दावन छोड़ के जाने का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया जिसे सुनकर भक्तजनों की आँखों से आश्रु धारा बह निकली। गुरु पूर्णिमा महोत्सव के अंतिम दिन कथा के उपरांत शिष्यों का दीक्षा कार्यक्रम हुआ तथा एक विशाल भंडारा भी भक्तों के लिए आयोजित किया गया। गुरु पूर्णिमा का महोत्सव बिना किसी बाधा के सकुशल पूर्ण हुआ तथा पूज्य गुरु कृष्ण चंद्र शास्त्री जी की अमृत वाणी से सभी भक्तों ने भागवत कथा का रसपान किया। पूज्य ठाकुर जी के सुपुत्र इंद्रेश उपाध्याय जी भी कथा के दौरान वहां उपस्थित रहे।

# तुलसीदास जयंती

एक ऐसे काल में जब देश मे हिन्दुओं का उत्पीड़न हो रहा था, उन्हें मुसलमान बनाया जा रहा था, ऐसे समय में एक व्यक्ति ने अकेले ही हिन्दुओं को उनके धर्म में स्थापित रखने बीड़ा उठाया था। वह व्यक्ति थे तुलसीदास जी, जिन्होंने रामचरितमानस, हनुमान चालीसा, जानकी मंगल, कवितावली जैसे न जाने कितने सारे काव्यों और ग्रंथों की रचना की। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को तुलसीदास जी की जयंती मनाई जाती है। इस वर्ष तुलसीदास जयंती 17 अगस्त, 2018 को मनाई जाएगी।

## तुलसीदास जी का जीवन परिचय :–

हालाँकि इनके जन्म के सम्बन्ध में कई मत हैं, किन्तु ज्यादातर विशेषज्ञों के अनुसार तुलसीदास जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में संवत 1589 को राजपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी देवी था।

कहा जाता है तुलसीदास जी की बाल्यकाल में शिक्षा तथा भक्ति की ओर कोई रूचि नहीं थी। वे इधर उधर घूम घूम के अपना समय व्यर्थ करते रहते थे। कुछ समय बाद इनका विवाह रत्नावली नाम की कन्या से करा दिया गया। रत्नावली बुद्धिमान थीं, तथा तुलसीदास जी को भी सदा भक्ति का महत्व बताती रहती थी। उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित भी करती थीं, किन्तु तुलसीदास जी पर इन सब का कोई असर

नहीं होता था।

**पत्नी से मिली भक्ति की प्रेरणा :—**

रत्नावली से वे अत्यधिक प्रेम करते थे, हर समय उनके साथ रहते थे। एक दिन रत्नावली अपने मायके गयीं थी, किन्तु वर्षा के कारण कुछ दिन वापस नहीं आ सकीं। उनसे मिलने तुलसीदास जी उफनती नदी को ही पार करके उनके मायके चले गए। यह देख रत्नावली जी क्रोधित हो गयीं और उन्हें फटकार लगा दी — कि लाज नहीं आपको पीछे पीछे यहां तक आ गए, "अस्थि चर्म मय देह यह, ता सों ऐसी प्रीति ता। नेकु जो होती राम से, तो काहे भव–भीत बीता" अर्थात मेरी इस देह से जितना प्रेम करते हैं उतना अगर श्री राम से करते तो आपका कल्याण हो जाता।

उस दिन तुलसीदास जी के हृदय में ये बात लग गयी, उन्होंने ग्रहस्त जीवन का त्याग कर दिया और वे प्रभु राम की भक्ति में लीन हो गए। उन्होंने बाबा नर हरिदास जी से शिक्षा प्राप्त की तथा उनकी प्रेरणा से श्री रामचरितमानस की रचना की। यह बाल्मीकि रामायण का ही सरल भाषा में अनुवाद था, जिसे छंदों और गद्यों में पिरोया गया था। इस अद्भुत ग्रन्थ की रचना 2 वर्ष 7 महीने और 26 दिनों में हुई थी।

**हिन्दू सभ्यता के रक्षक :—**

इन्होने अपनी रचनाओं द्वारा डूबते हुए हिन्दुओं के सूरज को फिर से उजागर किया। समाज की कई कुरीतियों को दूर किया तथा गौ सेवा और ब्राह्मण रक्षा का भी उपदेश दिया। इन्हे जन साधारण का कवि माना जाता है क्योकि इनकी सभी रचनाएँ आम जनमानस की ही भाषा में ही की गयी थी। तुलसी कृत हनुमान चालीसा आज भी देश के कोने कोने में पढ़ी जाती है, जिसमे हनुमान जी के गुणों तथा भक्ति का बखान किया गया है। इन्होने विनय पत्रिका, कृष्ण गीतावली, हनुमान बाहुक, रामलला नहछू, बरवै रामायण, जानकी मंगल तथा रामज्ञा प्रश्न आदि सहित कुल 24 कृतियों की रचना की। गोस्वामी तुलसीदास जी ने सगुण भक्ति पर बल दिया और श्री राम के चरित्र का बखान ऐसे किया की सम्पूर्ण देश में रामभक्ति की लहर दौड़ गयी। तुलसीदास जी को ही राम राज्य का सपना आम जनमानस को दिखाने का श्रेय जाता है।

# पुत्रदा एकादशी

पुत्रदा एकादशी मुहूर्त :—
22 अगस्त 2018 (बुधवार)
एकादशी तिथि प्रारम्भ : 05:16 बजे (21 अगस्त 2018)
एकादशी तिथि समाप्त : 07:40 बजे (22 अगस्त 2018)
पारण समय : 05:58 से 08:32

कृष्ण जी युधिठिर जी से श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में आने वाली एकादशी के महत्व की चर्चा करते हुए कहते हैं, की इस एकादशी के करने से मनुष्य को पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

**पुत्रदा एकादशी का महत्व :—**

श्रावण मास में प्रत्येक दिन अत्यंत शुभ होता है, और इसी प्रकार इस मास में आने वाली एकादशी भी अत्यंत पावन है। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में आने वाली एकादशी को पुत्रदा एकादशी कहते हैं। इस व्रत का नियमपूर्वक पालन करने से व्रती को पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है तथा वाजपेयी यज्ञ का फल भी मिलता है। अर्थात व्रती के पाप कटते हैं और स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता है।

इस माह में मनुष्य का मन चंचल हो जाता है तथा कामयुक्त भी, जो की पाप है। उस दृष्टि से भी इस माह में व्रत आदि के द्वारा मन को मर्यादा में रखने में सहायता मिलती है।

**पुत्रदा एकादशी व्रत की विधि :—**

पुत्रदा एकादशी का व्रत करने के लिए व्रती को दशमी के दिन से ही नियमों का पालन करना शुरू कर देना चाहिए। दशमी के दिन एक समय ही भोजन ग्रहण करें, जो कि सात्विक ही होना चाहिए अर्थात उसमे प्याज, लहसुन और मांस आदि नहीं होना चाहिए। एकादशी के दिन प्रातः

सूर्योदय से पूर्व ही उठ जाएँ और नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्नान आदि करें। स्नान के लिए किसी पवित्र नदी का प्रयोग उत्तम है किन्तु यदि आस पास नदी न हो तो आप घर पर ही स्नान कर लें और यदि संभव हो तो नहाने के जल में गंगाजल मिला लें। हरी का ध्यान और जप करते हुए स्नान करें। स्नान के पश्चात् पूजा की तयारी करें।

### किस प्रकार करें व्रत में पूजा? :—

पूजा के लिए सर्वप्रथम पुष्प, आम्र पत्र, बिल्व पत्र आदि तोड़ लें। उसके बाद जहाँ पूजा करनी है उस स्थान की सफाई अच्छे से करें। फिर भूमि पर एक तख्त अथवा चौक लगाएं, जिस पर शुद्ध लाल कपडा बिछाएं। अब इसके ऊपर भगवान विष्णु, देवी लक्ष्मी तथा गणेश जी की मूर्ति अथवा चित्र लगाएं। अब एक तिल के तेल का दीपक जलाएं और एक घी का दीपक तथा साथ में धूप भी जलाएं। इसके पश्चात् एक कलश की स्थापना करें, जिसपर पांच आम्रपत्र रखें तथा जल भरकर एक सिक्का भी डालें। कलश के चारों ओर एक रक्षा धागा तीन बार घुमा कर बाँध लें और फिर उसमे एक नारियल रख दें। कलश को तथा भगवानों को कुमकुम तथा अक्षत से तिलक करें। और फिर प्रभु की आरती उतारें, इस दिन की व्रत कथा पड़ें और चाहें तो विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ भी करें।

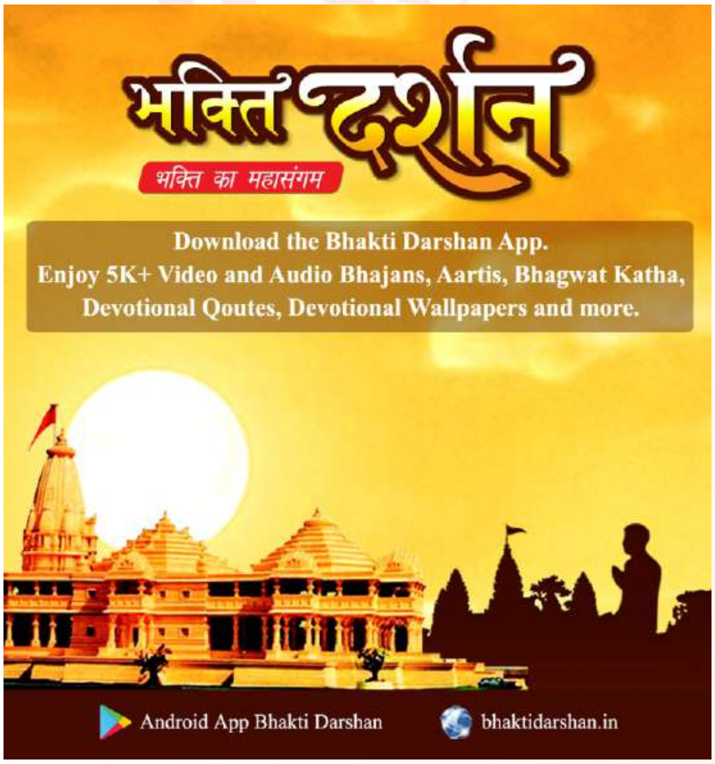


## रक्षा बंधन

रक्षा बंधन अनुष्ठान का मुहूर्त : 05:59 से 17:25

अवधी : 11 घंटे 26 मिनट

अपराह्न के समय रक्षा बंधन मुहूर्त : 13:39 से 16:12

अवधी : 2 घंटे 33 मिनट

### रक्षा बंधन का महत्व :—

राखी का त्यौहार हिन्दू और जैन धर्मों के लोग मुख्यतः मनाते हैं, वैसे आजकल अन्य धर्म के लोग भी इस त्यौहार को मनाने लगे हैं क्योकि यह भाई बहिनों का त्यौहार है जिसमे वे परस्पर एक दूसरे की रक्षा की कामना करते हैं। यह त्यौहार श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। भले ही यह उत्सव केवल भाई बहिनों तक सिमित रह गया हो किन्तु एक समय में यह किसी के भी बीच मनाया जा सकता था। अर्थात कोई शिष्य अपने गुरु को, कोई पुत्री अपने पिता को और कोई पत्नी अपने पति को ये रक्षा सूत्र बाँध सकती थी। यह त्यौहार परस्पर रक्षा की कामना और उनकी लम्बी उम्र के लिए रक्षासूत्र बांधने का है, इसलिए कोई भी मनुष्य जो किसी के लिए मंगलकामना करते हैं ये रक्षा सूत्र उसे बाँध सकते हैं।

### पौराणिक कथाये :—

रक्षाबंधन कब से शुरू हुआ इसकी कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है किन्तु रक्षा बंधन माानने से जुडी कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। जिनमे से दो प्रमुख है, पहली कथा जुडी है भगवान विष्णु तथा देवी लक्ष्मी से। एक बार दानवीर असुर राज बलि ने अपने 100 यज्ञ पूरे किये और दो लोकों के स्वामी बन गए। यज्ञ पूर्ण होने के लिए अंत में उन्हें ब्राह्मणों को दान देना था, ऐसे में भगवान विष्णु वामन अवतार धरकर वहां आ गए और उन्होंने बलि से तीन पग भूमि मांगी। बलि ने भी उनको तीन पग भूमि नाप लेने को कहा, इसके बाद

प्रभु ने अपना रूप विराट किया और दो पग में सम्पूर्ण पृथ्वी और स्वर्ग नाप लिए अब बलि के पास देने के लिए कुछ न बचा तो उसने अपना मस्तक आगे बढ़ा दिया और कहा प्रभु आप अपना तीसरा पग मेरे शीश पर रख लीजिये। ऐसा करते ही वह पाताल लोक में पहुंच गया, विष्णु जी उसकी दानवीरता से अति प्रसन्न हुए और उसे अमरता का वरदान दे दिया और उस से उसकी इच्छा पूछी। उसने कहा प्रभु मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ पाताल लोक में ही वास करें। प्रभु को उसके साथ पाताल लोक जाना पड़ा और इससे देवी लक्ष्मी परेशान हो गयी। एक दिन वह पाताल लोक गयीं और बलि को रक्षा सूत्र बाँध कर भाई बना लिया, बलि ने उनसे पुछा कि उन्हें क्या उपहार चाहिए तो माता लक्ष्मी ने उनके पति को वचन मुक्त करने के लिए कहा। और इस प्रकार उनकी राखी का मान रखते हुए उन्होंने विष्णु जी को वचन मुक्त कर दिया।

एक अन्य मान्य कथा के अनुसार, एक बार देवलोक में देवताओं और असुरों के बीच महासंग्राम हो गया। जिसमे देवता परास्त हो रहे थे, तब देवराज इंद्र की पत्नी इन्द्राणी गुरु बृहस्पति के पास गयीं और उनसे देवताओं की जीत के लिए उपाय पुछा। गुरु बृहस्पति ने उन्हें एक धागा अभिमंत्रित करके दिया और कहा इसे इंद्र की कलाई में बांधने से उनकी रक्षा होगी। इन्द्राणी ने वह रक्षा सूत्र इंद्रदेव की भुजा पर बाँध दिया, जिसके प्रभाव से वे अत्यंत तेजस्वी हो गए और वह युद्ध भी जीत गए।

### महाभारत में भी है वर्णन :–

रक्षासूत्र बांधने का वर्णन महाभारत में भी मिलता है, हम सभी जानते हैं की कृष्ण द्रौपदी को अपनी सखी मानते थे। एक दिन शिशुपाल ने एक यज्ञ के दौरान कृष्ण और द्रौपदी का अपमान कर दिया, जिससे कृष्ण ने क्रोधित हो अपने चक्र से उसका गला काट दिया। चूँकि शिशुपाल उनकी बुआ का ही पुत्र था इसलिए कृष्ण को उसकी मृत्यु का दुःख भी था, और इस दुःख में जब चक्र वापस उनके पास आया तो उनकी उंगली कट गयी। द्रौपदी ने उनकी ऊँगली से रक्त बहता हुआ देखा तो उन्होंने जल्दी से उस पर अपनी साड़ी का एक सिरा फाड़ कर उनके हाथ पर बाँध दिया। कृष्ण ने तभी उनको वचन दिया की जीवन में जब कभी भी द्रौपदी को उनकी जरुरत होगी तब वे उनकी सहायता के लिए आ जायँगे। जब द्युत सभा में द्रौपदी का अपमान हो रहा था कृष्ण जी ने अपने वचन के अनुसार उनका चीर बढ़ा दिया और उनके सम्मान की रक्षा की।

## अगस्त माह राशिफल

**मेष (Aries) -**

मेष राशि के जातकों को अगस्त के महीने में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, विशेषकर वैवाहिक जीवन से जुड़ी परेशानियां। जीवनसाथी से तनावपूर्ण रिश्ते आपको परेशान कर सकते हैं। आर्थिक मोर्च पर आपको अपने खर्चों पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता होगी। मेष राशि के कुछ जातकों को इस महीने आर्थिक संकट का सामना भी करना पड़ सकता है। काम के सिलसिले में इस महीने विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। यदि आप स्वयं का कोई व्यवसाय कर रहे हैं तो आपको थोड़ा सावधान रहने की जरुरत है। ग्रहों की चाल यह इशारा कर रही है कि, आर्थिक मामलों को लेकर किसी भी व्यक्ति पर आंख मूंदकर भरोसा न करें। निवेश के लिहाज से भी समय अच्छा नहीं रहेगा। इस महीने आप धार्मिक कार्य और धार्मिक संस्थाओं से जुड़े कार्यों में व्यस्त रहेंगे। इसके अलावा कुछ लोग तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। गर्भवती महिलाएं नियमित आराम करें और डॉक्टर के परामर्श का अनुसरण करें।

**वृष (Taurus) -**

बच्चों के प्रति थोड़े चिंताग्रस्त हो सकते हैं खासतौर पर उनकी पढ़ाई को लेकर ज्यादा परेशान हो सकते हैं। बच्चों के साथ अपना ज्यादा से ज्यादा समय बिताएंगे और उन्हें उनकी पढ़ाई में मदद करेंगे। इस माह आपके प्रेम संबंधों में भी टकराव संभव है। आपके लव पार्टनर आपसे नाखुश रहेंगे और आपस में बहस होती रहेगी। इसलिए आपको कोमलता के साथ स्थिति को संभालने का सुझाव दिया जाता है। इस

दौरान आपको अपने भाई–बहनों व दोस्तों का पूरा सहयोग मिलेगा जो आपको लाभकारी परिणाम देगा। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। अगर किसी प्रकार का लाभ नहीं मिलेगा तो हानि भी नहीं होगी। निजी या कार्य संबंधी यात्राएं हो सकती हैं। सितारों की चाल कहती है कि प्रतियोगी परीक्षा में बैठने वाले छात्र अच्छा प्रदर्शन करेंगे और अपनी मेहनत से अच्छे नंबर प्राप्त करेंगे। आईटी फील्ड में कार्यरत या फिर नाटक, थिएटर, फिल्म आर्टिस्ट आदि के लिए अच्छा समय है। करियर के क्षेत्र में इस दौरान सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे।

### मिथुन (Gemini) -

अगस्त माह मिथुन राशि के जातकों के लिए सामान्य रहेगा। आर्थिक दृष्टि से अगस्त आपके लिए ज्यादा अनुकूल नहीं है। आपके खर्चों में वृद्धि की संभावना है। साथ ही आपके सामने आर्थिक संकट की स्थिति भी आ सकती है। अपने अनावश्यक खर्चों में लगाम लगाएँ और धन की बचत पर ध्यान दें। आपकी निजी समस्या आपके कार्यक्षेत्र को प्रभावित कर सकती है। अच्छा रहेगा कि आप अपने काम पर ही ध्यान दें और तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दें। इस दौरान आपकी ऊर्जा में कमी देखी जा सकती है। अगस्त माह के फलादेश के हिसाब से पढ़ाई में बच्चों का कमजोर प्रदर्शन आपके तनाव का कारण बन सकता है। वहीं यदि आप व्यापार में किसी के साथ साझेदारी कर रहे हैं तो आपको अपने पार्टनर से सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि इस दौरान वह आपको धोखा दे सकता है। मन में नकारात्मक विचारों को कतई जगह न दें और विपरीत परिस्थितियों का डटकर सामना करें। अपनी वाणी में संयम रखें।

### कर्क (Cancer) -

इस महीने आपके वैवाहिक जीवन में दुःखद मोड़ आ सकता है। यदि समय रहते हुए आपने परिपक्वता के साथ हालात को नहीं संभाला तो परिस्थितियां और बिगड़ सकती है। विशेषकर महिलाओं को अपने वैवाहिक जीवन में अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इस दौरान महिला जातकों को प्रताड़ना का सामना करना पड़ सकता है। वैवाहिक जीवन में तनाव होने से पारिवारिक जीवन प्रभावित होगा और बच्चों पर इसका गलत प्रभाव पड़ेगा। इस वजह से आपके बच्चे अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इसलिए भलाई इसी बात में है कि जीवनसाथी के साथ सभी विवादों को शांति से बैठकर सुलझाएं। वहीं दूसरी ओर इस माह आपका ध्यान अपने काम पर होगा। आपकी दृढ इच्छाशक्ति की वजह से व्यक्तिगत जीवन में होने वाला परिवर्तन आपके व्यावसायिक जीवन को प्रभावित नहीं कर पाएगा। अपने करियर संबंधी सभी योजनाओं पर आप काम करेंगे और आपको उसका उत्तम फल प्राप्त होगा। कार्य स्थल पर आप वरिष्ठ अधिकारियों और सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर चलेंगे। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का व्यवसाय कर रहे जातकों को लाभ की प्राप्ति होगी। यह माह किसी भी नए तरह के निवेश के लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं है। बात करें अगर आपकी माता–पिता की सेहत की, तो उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। अपनी वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं को हल करने के लिए आप माता–पिता से सहयोग ले सकते हैं।

### सिंह (Leo) -

सिंह राशि के जातकों के लिए महीने का पहला भाग थोड़ा परेशानी भरा रह सकता है, विशेषकर प्रोफेशनल लाइफ में थोड़ी समस्याएं आ सकती हैं। जीवन के प्रति अरुचि पैदा हो सकती है जो परेशानी का कारण बनेगी लेकिन ये परिस्थितियां ज्यादा दिन तक नहीं रहेंगी। महीने के दूसरे पड़ाव में आत्म विश्वास और साहस आने से हालात सामान्य हो जाएंगे। वहीं इस महीने में कुछ दिन आर्थिक अस्थिरता बनी रह सकती है। बेवजह के खर्च करने से बचें और अपने बजट पर ध्यान दें। जीवनसाथी से आपके रिश्ते अच्छे रहेंगे और आप दोनों एक–दूसरे के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे। वहीं जीवनसाथी की सेहत को लेकर थोड़ा सावधान रहें। मानसिक शांति भंग होने से अनिद्रा जैसी परेशानी हो सकती है, इसलिए आवश्यकता से अधिक नहीं सोचें। क्योंकि इससे आपकी परेशानी और बढ़ सकती है। सकारात्मकता के साथ एकाग्र होकर अपने लक्ष्य पर ध्यान दें। दिमागी खेल जैसे– शतरंज आदि के खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

**कन्या** (Virgo) -

अगस्त का महीना कन्या राशि के लोगों के लिए अच्छे संकेत नहीं दे रहा है। महीने की शुरुआत में आपके मन में असमंजस की स्थिति बनी रहेगी। इस वजह से आप विवेकपूर्ण निर्णय लेने में असमर्थ रहेंगे। आर्थिक मोर्चे पर भी इस महीने आपको संभलकर चलना होगा। बेवजह खर्च करने से बचें और पैसों के लेनदेन पर विशेष ध्यान रखें वरना धोखाधड़ी होने की संभावना है। इसके अलावा यह महीना पारिवारिक जीवन के लिए भी शुभ संकेत नहीं दे रहा है। तनाव बढ़ने से परिवार में शांति और सद्भाव का अभाव रहेगा, इसलिए हर परिस्थिति में संयम व समझदारी से काम लें और मधुर रिश्ते बनाकर चलें। कम्प्यूटर के उपकरण से संबंधित व्यवसाय करने वाले जातकों के लिए यह महीना अच्छा है, इस अवधि में अच्छा मुनाफा प्राप्त होने की संभावना बन रही है। कम्प्यूटर हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और सॉफ्टवेयर डेवलपर्स से जुड़े जातक अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस दौरान वे अपने करियर के सबसे अच्छे मुकाम पर होंगे। सेहत के लिहाज से यह महीना अच्छा दिखाई दे रहा है लेकिन आंखों की खास देखभाल करें।

**तुला** (Libra) -

विदेश में काम करने वालों को सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि ऐसी संभावनाएं हैं कि आप पर कोई बड़ा जैसे कागजात या पैसों की चोरी का इल्जाम लग सकता है। वहां मौजूद उच्च अधिकारियों से भी विवाद हो सकता है। माह की शुरुआत में आप लक्ष्यहीन होकर कार्य करेंगे लेकिन आधा माह बीत जाने पर आप अपनी एक नई शुरुआत करेंगे। इन सबके अलावा ये समय आपके परिवार वालों के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रहेगा। माता–पिता के लिए समय उचित नहीं है। उन्हें किसी भी प्रकार की मानसिक अशांति या स्वास्थ्य संबंधी प्रॉब्लम्स से गुजरना पड़ सकता है, इसलिए उन पर इस दौरान ज़्यादा ध्यान देने की जरूरत है। ग्रहों की चाल के हिसाब से पारिवारिक जिंदगी इस दौरान थोड़ी अस्त–व्यस्त रहेगी। आपके परिवार वालों को आपसे कुछ प्रॉब्लम्स हो सकती हैं और वो आपसे नाखुश हो सकते हैं। परिवार की ये समस्याएं प्रोफेशनल लाइफ में भी देखने को मिल सकती हैं। इन सभी समस्याओं को जल्द से जल्द हल करें और परिवारिक व व्यावसायिक जीवन में संतुलन लाएं।

**वृश्चिक** (corpio) -

शादीशुदा जोड़ों के लिए यह माह थोड़ा चुनौती पूर्ण हो सकता है। एक–दूसरे के प्रति समय न दे पाने व गलतफहमियों की उत्पत्ति होने के कारण आपके शादीशुदा जीवन में तनाव रह सकता है। रोजमर्रा के झगड़ों व वाद–विवादों के कारण घर–परिवार से खुशहाल वातावरण कहीं गायब सा हो सकता है। परिवार में वरिष्ठ जनों के साथ भी विचार न सहमत हो पाने के कारण बहस हो सकती है। जल्दबाजी में लिए गए आपके फैसले और दूसरों पर हावी होने का स्वभाव लोगों को ना खुश कर सकता है। वहीं दूसरी तरफ विदेश जाने वालों के लिए समय ठीक नहीं है। जो लोग अपने काम की वजह से पहले से ही विदेश में रह रहे हैं, उन्हें इस वक्त अपने पैसों के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी जाती है। बात करें अगर आपके बच्चों की तो अभी उन पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। यदि ऐसा नहीं हुआ तो वो भटक भी सकते हैं। लगभग आधा माह गुजर जाने के बाद आपके व्यावसायिक जीवन में सकारात्मक बदलाव आने लग जाएंगे।

**धनु** (Sagittarius) -

यह माह आपके लिए उलझन भरा रहेगा। एकाग्रता में कमी आ जाने से आपको परेशानी हो सकती है जिस कारण आप परेशान हो सकते हैं। कई बार आपको चिड़चिड़ापन भी महसूस हो सकता है और आपका गुस्सा पारिवारिक समस्याओं को बढ़ा सकता है। अगर बात करें आपके काम की, तो इस दौरान आपको अपने बिजनेस व आर्थिक चीजों से जुड़े मामलों में सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि आपका अपना ही कोई करीबी आपके साथ धोखा कर सकता है। इस बीच आप आर्थिक तंगी से भी गुजर सकते हैं। बेहतर वित्तीय नियोजन की आवश्यकता है और ख़र्चों पर ध्यान देने की जरूरत है। नकारात्मक ऊर्जा को अपने ऊपर हावी न होने दें और पॉजीटिव रहें। लगभग आधा माह बीत जाने के बाद आपका अच्छा समय शुरू हो जाएगा। वर्किंग महिलाओं के लिए समय अनुकूल नहीं है क्योंकि इस दौरान वो अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ में बैलेंस नहीं रख पाएंगी। कार्यभार के चलते आप तनाव में जा सकते हैं।

**मकर** (Capricorn)-

मकर राशि के लोगों का ध्यान अध्यात्म की ओर ज्यादा लगेगा। यह माह शादीशुदा लोगों के लिए कुछ खास नहीं रहेगा। आपकी राह में कई प्रकार की चुनौतियां आ सकती हैं और संबंधों से मिठास भी कम हो सकती है। अहम को लेकर झगड़े आपके वैवाहिक जीवन को तहस–नहस भी कर सकते हैं और आप में से कुछ जातक अलग रहने का फैसला भी कर सकते हैं। पढ़ाई में कोई दिक्कत आपके बच्चों को परेशान कर सकती हैं। अच्छा होगा यदि आप अपना ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान अपने बच्चों की ओर दें। आर्थिक रूप से यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा। लगभग आधा माह बीत जाने पर विरासत से किसी प्रकार के लाभ के योग हैं जिससे आपके संसाधनों में वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। नौकरी कर रहे जातक इस दौरान ब्रेक लेना पसंद करेंगे। कुछ लोग घूमना पसंद करेंगे तो कुछ धर्म व अध्यात्म के रास्ते पर निकल सकते हैं। कलाकारों के लिए उचित समय है। उनकी इस अवधि में काफी ज़्यादा डिमांड रहेगी।

**कुम्भ** (Aquarius)-

यह महीना विशेषकर कुंभ राशि की महिला जातकों के लिए अच्छा प्रतीत नहीं हो रहा है। इस माह उन्हें कुछ शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए अपना ध्यान रखें और डॉक्टर से परामर्श लेते रहें। आप अपने व्यक्तिगत जीवन में कुछ परेशानियों को महसूस करेंगे। वहीं कार्य स्थल पर सहकर्मी, सीनियर्स और बॉस के साथ अच्छे रिश्ते बनाकर चलें। ऑफिस में किसी की बुराई करने से बचें और सभी से विनम्रता से बात करें। महीने के दूसरे पड़ाव में रिश्तों को लेकर अपना दृष्टिकोण साफ रखना होगा। सितारों की चाल कहती है कि आपकी उन्नति में जीवनसाथी का अहम योगदान होगा और आपका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। इस माह आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और यदि आप किसी योजना में निवेश करेंगे तो आपको इससे अच्छा लाभ होगा।

**मीन** (Pisces)-

यह माह आपके जीवनसाथी की सेहत के लिए बिल्कुल ठीक नहीं है। इस दौरान वे हाई ब्लड प्रेशर, बुखार या संक्रमण की समस्या से पीड़ित रह सकते हैं, इसलिए थोड़ा सावधान रहें। इस माह आपके विरोधी मजबूत स्थिति में रहेंगे और आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे, अतः थोड़ी सावधानी बरतें। पर्सनल व प्रोफेशनल लाइफ में जल्दबाजी में आकर कोई भी निर्णय लेने से बचें, क्योंकि ऐसा करना आपके लिए घातक साबित हो सकता है। इस माह बात करें अगर आपके व्यक्तिगत जीवन की तो, इसमें विवाद और अशांति रह सकती है। प्रियजनों के साथ रिश्तों में दूरियां आ सकती है। हालांकि प्रयास करने से रिश्तों में सुधार होगा और संबंध सामान्य हो जाएंगे। मीन राशिफल 2018 के अनुसार आर्थिक लिहाज से जुलाई का महीना आपके लिए सामान्य रहने वाला है। इस अवधि में यदि आप कोई बड़ा निवेश करने के बारे में सोच रहे हैं तो रुक जाएं। क्योंकि यह समय इस काम के लिए उपयुक्त नहीं है। इस माह अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें। पेट संबंधी कुछ रोगों से पीड़ित रह सकते हैं। यदि आप सेहतमंद रहना चाहते हैं तो अपनी संयमित जीवनशैली और स्वच्छ भोजन की आदत डालें।

**DOWNLOAD THE BHAKTI DARSHAN APP.**
ENJOY 5K+ VIDEO AND AUDIO BHAJANS, AARTIS, BHAGWAT KATHA,
DEVOTIONAL QUOTES, DEVOTIONAL WALLPAPERS AND MORE.